गीता उपदेश

अनमोल वचन

© PRINTMAN

© PRINTMAN

3I DaysEffect Table Calendar in Wiro-O-Binding

Introducing Printman's 31 Days Table Calendar, a convenient and stylish addition to your workspace. With its compact design, this calendar features a sleek layout, providing ample space for daily planning and organization. Perfect for keeping track of appointments, events, and deadlines, it's an essential tool for staying productive.

31 Days Table Calendar
Designer Paper

Size :6.25"x7.5"
(approx)

31 Days

1

हर साल एक बुरी आदत को जड़ से खोदकर फेंका जाए तो कुछ ही साल में बुरे से बुरा व्यक्ति भी भला हो सकता है।

8

जिसके श्रेष्ठ विचार रहते हैं, वह जीवन में कभी भी अकेला नहीं रह सकता।

Anmol Vachan
Design No. 1901

14

कुछ अलग करना है, तो भीड़ से हट कर चलो, भीड़ साहस तो देती है, पर पहचान छीन लेती है।

18

अगर यह लगने लगे कि लक्ष्य हासिल नहीं होगा तो लक्ष्य को नहीं बल्कि अपने प्रयासों को बदले।

26

जीवन में प्रगति के साथ हम अपनी योग्यताओं की सीमाओं से अवगत होते जाते हैं।

31

विचार सुनना पुष्पों को चुनने जैसा है और उन पर चिन्तन करना उन्हें माला में गूँथने के समान है।

31 Days Table Calendar
Designer Paper

Size :6.25"x7.5"
(approx)

31 Days

गीता उपदेश

1

कर्मयोग

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥

समबुद्धि युक्त मनुष्य इस जीवन में ही
अच्छे तथा बुरे कार्यों को त्याग देता है। अतः योग
में लग जाओ क्योंकि कर्म बन्धन से छूटने
का यही कार्य-कौशल है।

भगवद् गीता, अध्याय-2, श्लोक 50

8

शरण

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः ।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥

पाप कर्म करने वाले, मूर्ख,
असुरों के स्वभाव वाले नीच मनुष्य
तथा माया के द्वारा हरे हुए ज्ञान वाले
मेरी शरण में नहीं आते हैं।

भगवद् गीता, अध्याय-7, श्लोक 15

Geeta updesh
Design No. 1902

14

भक्ति

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥

हे अर्जुन, भक्ति के बिना सभी कर्मों
का परित्याग करने से सुख की प्राप्ति
नहीं होती। सच्चा कर्मयोगी भक्ति से
शीघ्र ही परमात्मा को प्राप्त करता है।

भगवद् गीता, अध्याय-5, श्लोक 6

18

ज्ञान

श्रेयाद्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप ।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥

हे परंतप अर्जुन, ज्ञानयज्ञ
द्रव्ययज्ञ से श्रेष्ठ है, क्योंकि, हे पार्थ,
तत्त्वज्ञान की प्राप्ति ही सारे कर्मों का
लक्ष्य अर्थात् पराकाष्ठा है।

भगवद् गीता, अध्याय-4, श्लोक 33

26

शरण

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति ।
तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति ॥

जैसे नदियों के बहुत सारे जल के प्रवाह
स्वाभाविक रूप से समुद्र की ओर जाते हैं, वैसे
ही संसार के शूरवीर भी आपके प्रज्वलित
मुखों में प्रवेश कर रहे हैं।

भगवद् गीता, अध्याय-11, श्लोक 28

31

कृपा

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥

मैं उन पर निश्चय ही विशेष
कृपा करने के लिए, उनके हृदय में स्थित
अज्ञान रूपी अंधकार को प्रकाशमय
ज्ञान रूपी दीपक के द्वारा दूर करता हूँ।

भगवद् गीता, अध्याय-10, श्लोक 11